

हिम्मत और जिन्दगी

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म बिहार के बेगूसराय जिला के सिमरिया गाँव में 1908 में हुआ था। दिनकर छायावादी कविता के प्रतिनिधि कवियों में से एक हैं। राष्ट्र - प्रेम, स्वतंत्रता, संघर्ष और भारतीय जनता के दुःख-दर्द उनकी कविताओं के विषय हैं। बिहार सरकार में सब रजिस्ट्रार, उपनिदेशक और 1950 में बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में हिन्दी विभाग के आचार्य पद पर आसिन रहे। 1952 से 1963 तक रामधारी सिंह दिनकर राज्यसभा के सदस्य रहे। केन्द्रीय गृह मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार भी रहे। "संस्कृति के चार अध्याय" पुस्तक पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और उर्वशी पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - रेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, ३ रश्मिर्वाती, संस्कृति के चार अध्याय।

पानी में जो अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सुखा चुका है; वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है, वे मौत लेकर बाहर आसँगे। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाये भी रह सकता है। "थकतेन भुजीष्या": बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती हैं।

लेखक कहते हैं कि महाभारत में जीत पाण्डवों की हुई; क्योंकि उन्होंने लाक्षग्रह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास की जोखिम को पार किया था।

"श्री विस्वनाथ चर्चित ने कहा है कि जिन्दगी की सबसे बड़ी सफलता हिम्मत है, आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।" साहस की जिन्दगी सबसे बड़ी जिन्दगी होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात कि चिन्ता नहीं करता कि समाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है। जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है।

अर्नाल्ड बेनेट - "जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, जिन्दगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सकता, वह सुखी नहीं हो सकता। जिन्दगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है। जीवन के साधकों! तुम निचली डाल का फूल होड़कर लौट जा रहे हो, तो फिर फुमानी पर का यह लाल-लाल आम किसके वास्ते है? समुद्र के अंतराल

मैं छिपे हुए मौखिक - कोष को कौन बाहर लायेगा ? दुनिया में जितने भी मजे बिखरे गए हैं उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है । कामना का दमन छोटा मत करो, जिन्यही के फल को दोनों हाथों से दबाकर नियोड़ों, रस की निर्दुरी तुम्हारे बहार भी बह सकती है ।